International Journal of Enhanced Research in Educational Development, IJERED,
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 3, May.-June, 2025

हिंदी की सशक्त विधा के रूप में व्यंग्य का स्वरूप एवं महत्व

कुलबीर सिंह

सहायक, प्राध्यापक, हिंदी राजकीय महाविद्यालय, बहु
झज्जर, हरियाणा/ एवम् अनुसंधान शोधार्थी, नीलम यूनिवर्सिटी, कैथल।

व्यंग्य का स्वरूप

व्यंग्य की उत्पत्ति 'अज्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग व 'यत' प्रत्यय लगाने से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ है ताना कसना। व्यंग एक गंभीर प्रकार का लेखन कार्य है। इसमें भी विसंगति को खोज कर उसके अंतर्गत तत्वों को उद्घाटित किया जाता है। यह लेखक की लेखन चेतना को झकझोरता है। वस्तुत: व्यंग्य समाज के मानस या चरित्र में आई रोगग्रस्ता को पहचानता है और उसे दूर करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब से भाषा का जन्म हुआ व्यंग्य का जन्म भी हुआ। हम अपने दैनिक जीवन में बातें करते समय व्यंग्य भी करते हैं या कसते हैं व्यंग्य 'किया' जाता है, 'कसा' जाता है, व्यंग्य 'मारा' जाता है, व्यंग 'बाण चलाया' जाता है। यह मुहावरे व्यंग्य के तीखेपन को दर्शाते हैं।

व्यंग्य का प्रयोग शुरू से ही आम बोलचाल की भाषा में तो रहा परंतु साहित्य में इसका बहुत बाद में शुरू हुआ। साहित्य में सभी को साथ लेकर चलने का गुण होता है परंतु व्यंग्य के साथ है ऐसा नहीं है।वह सभी को साथ लेकर नहीं चलता। वह समाज में फैली बुराइयों का विरोध करता है, पाखंड _व्याभिचार पर चोट करता है। समाज में व्याप्त छल प्रपंच और ऊपर से दिखाई ना देने वाली विसंगतियों को उजागर करता है, दोगलेपन को धिक्कारता है। इसके उपहास में भी आलोचना का तत्व होता है। इसलिए वह साहित्य में आसानी से प्रवेश नहीं कर पाता। अधिकतर व्यंग्य साहित्य में मजबूरी में प्रवेश करता है जब कोई साहित्यकार समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपो, पाखंड को सामाजिक दबाव या राजनीतिक कारणों से या कभी-कभी अन्याय पूर्ण व्यवस्था का खुद भी जीविका उपार्जन के लिए एक अंग होने की वजह से प्रत्यक्ष विरोध नहीं कर पाता तो वह उन्हें व्यंग्य के माध्यम से समाज के सामने लेकर आता है। व्यंग्य व्यंजनात्मक शैली का प्रयोग करता है। व्यंग्य में प्रत्यक्ष जो कहा जाता है वही उसका अर्थ नहीं होता बल्कि वह कुछ अन्य बात व्यंजित करता है। समझदार व्यक्ति उस व्यंजन पूर्ण शैली मे कही गई बात को समझ लेता है परंतु घमंडी एवं पाखंडी व्यक्ति अक्सर उसे समझ नहीं पाता है। व्यंग्य की शक्ति का फायदा उठाकर 'श्रीलाल शुक्ल' सरकारी सेवा में रहते हुए भी 'राग दरबारी' लिख सके,इसी प्रकार 'दांते' ने अपनी रचना 'डिवाइन कॉमेडी' में व्यंग्य द्वारा तत्कालीन समाज का नग्न रूप में चित्रण कर समाज में फैली विसंगतियों का विरोध किया।

व्यंग्यकार "श्रीलाल शुक्ल" व्यंग्य को एक हथियार के रूप में स्वीकार करते हुए कहते हैं– "मैंने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है"[1] हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार नरेंद्र कोहली व्यंग्य के स्वरूप को अपने शब्दों में परिभाषित करते हुए कहते हैं– "कुछ अनुचित, अन्याय पूर्ण अथवा गलत होते देखकर जो आक्रोश जागता है, वह यदि काम में

परिणत हो, अपनी असहायता में वक्र होकर जब अपनी और दूसरों की पीड़ा पर हंसने लगता है,तब वह विकट व्यंग्य होता है, पाठक के मन को चुभ लाता सहलाता नहीं, कोड़े लगाता है, तब सार्थक और सशक्त व्यंग्य कहलाता है"[2] व्यंग्य के उपरोक्त वर्णित स्वरूप को देखते हुए व्यंग्य विषयक एक आम धारणा स्पष्ट होती है कि व्यंग्य में पीड़ा एवं आक्रोश का ऐसा संपूर्ण सृजन होता है जो पाठक के बहिरंग को हंसने के लिए मजबूर करता हुआ अंतरंग में एक अनकही चुभन पैदा करता है। वह जीवन से साक्षात्कार करता है विसंगतियों, पाखंड, आडंबर, अन्याय पर प्रहार करता है। कथनी एवं करनी की समीक्षा करता है, साथ ही सामाजिक जीवन में परिवर्तन एवं निर्माण की ओर इंगित करता है।

व्यंग्य का महत्व

व्यंग्य हिंदी साहित्य की एक उद्देश्यपूर्ण विधा है जिसका सीधा संबंध मानव जगत की विसंगतियों के साथ है, जिसकी उपयोगिता इन विसंगतियों के परिहार से है। व्यंग्य रचनाकार संसार में फैले दुर्गुणों, दोषों, मिथ्याचारो, पापाचारो, मूर्खताओं पर प्रहार करता है।इस प्रकार व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य है मानव अपने बुरे आचरण को बदलने के लिए मजबूर हो जाए और समाज का स्वस्थ रूप अपनाने के लिए बाध्य हो जाए।

व्यंग्य के प्रहार एवम् सुधार की चर्चा करते हुए अंग्रेजी विद्वान जेम्स हेने ने एक स्थान पर लिखा है– "बिजली की कड़क अनाचारी को भयभीत करती है, और साथ ही वायु को शुद्ध भी करती है, पूरी ईमानदारी से लिखे गए श्रेष्ठ व्यंग्य का यही स्वरूप है"।[3] व्यंग्य में हास्य एवम् सुधार या परिष्कार का भाव विद्यमान रहता व्यंग्य रचनाओं का उद्देश्य समाजगत परिवेशानुकूल प्रभावित करने वाला होता है,उदाहरण के लिए आदिकाल में राजा महाराजाओं को युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए व्यंग्य लिखे जाते थे, तो भक्ति काल में धर्म के नाम पर होने वाले पाखंड, आडंबर एवं व्याभिचारो का व्यंग्य द्वारा विरोध किया गया। इसी प्रकार रीतिकालीन कवियों ने आलसी,भोगी और दुराचारी राजाओं को व्यंग्य द्वारा मर्माहित किया। व्यंग्य का महत्व स्वतंत्रता से पहले अंग्रेजों के समय भी देखने को मिला, अनेक कवियों ने अपने व्यंग्यो द्वारा सोई हुई भारतीय जनता को जगाने एवं देश पर अपने प्राण न्योछावर करने के लिए प्रेरित किया ही साथ ही साथ स्वदेशी सूदखोरों पर भी तीक्ष्ण प्रहार किए। आज साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में व्यंग्य पूर्ण रूप से छाया हुआ है। इसीलिए "सरोजिनी प्रीतम" ने अपनी रचना "हंसिकाए"की भूमिका में व्यंग्य की विशालता को प्रकट करते हुए लिखा है–"व्यंग्य का जन्म ही शायद एक दर्द से होता है,किसी का हंसना और किसी पर हंसना और फिर अपने आप भी हंस लेना जिंदगी के अनमोल क्षण है, जो अनचाहे चुपके से आकर पूरे प्रवाह को बदल देते हैं।[4]

व्यंग्य में सुधार की प्रबल भावना होती है।यह सामाजिक दुरा चारों,व्याप्त कुरीतियों का तथा समाजगत एवं जीवनगत बुराइयों का पर्दाफाश करता है, तथा उन पर तब तक प्रहार करता है जब तक विकृति में सुधार नहीं आ जाता। इस संबंध में "मधुसूदन पाटिल" का विचार है "ढोंग का फोड़ा बढ़ता जाता है तो मलहम भी बेअसर हो जाता है फिर नस्तर के बिना कोई उपाय नहीं, आखिर भ्रष्टाचार की मवाद तो बाहर निकलती ही है,इसी प्रकार सामाजिक ढोंग के फोड़े के लिए व्यंग्य नस्तर की धार एंटीसेप्टिक है।"[5] समाज में समय-समय पर अनेक दुराचार एवं पापाचार प्रचलित हो जाते हैं, जिन्हें कानून द्वारा दंडित नहीं किया जा सकता,नैतिक चेतना तथा धर्म में विश्वास भी लोगों को कभी-कभी अपराध करने से रोकने में सफल नहीं हो पाते। कई अपराध तो धर्म सम्मत होकर और भी अधिक अत्याचार के कारण बनते हैं। इस अवस्था में व्यंग्य द्वारा इन अपराधों एवं दुराचारों का पर्दाफाश करते हुए मानव के सम्मुख उनके घृणित व्यापार को सशक्त तथा यथार्थ रूप में रखा जाता है। भले दुराचार कितने आवरणों में लिपटा हो हुआ हो, कुरीति धर्म सम्मत हो अथवा कूटनीति बुलावे में डालने वाली

हो, व्यंग्य उन सब आवरणों,आडंबरों को उघाड़ कर उसे पाठक के सामने उसके नग्न रूप में रखने का प्रयास करता है।साथ ही जिन अनैतिक व्यक्तियों को किसी प्रकार की आत्मग्लानि अनुभव नहीं होती, तब व्यंग उनकी आत्मरती के भाव को आघात पहुंचा कर उन्हें कर्तव्य पथ पर लाने का प्रयत्न करता है। इससे व्यंग्य की ओर महता बढ़ जाती है।

व्यंग्य साहित्य में व्यंग्यकार का महत्व या कार्य एक सर्जन की तरह होता है जिस प्रकार कोई सर्जन दूषित अंगों को काटकर रोगी के जीवन की रक्षा करता है उसी प्रकार एक सजग व्यंग्यकार अपने व्यंग्य द्वारा समाज में पहले रोगों रूपी बुराइयों की सर्जरी करके एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी भूमिका को अच्छी तरह से निभाता है। प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से व्यंग्य में सुधार की भावना अवश्य रहती है। जब व्यंग्यकार प्रत्यक्ष रूप से किसी प्रकार से सुधार की ओर संकेत किए बिना व्यक्ति एवं समाज की दुर्बलता अथवा अनाचार को नष्ट करने के उद्देश्य से प्रहार करता है तब भी उसकी नाश करने की मूल प्रेरणा में सुधार की भावना आवश्यक रहती है।"जान एम0 बुलिट" के अनुसार व्यंग्यकार का प्रधान उद्देश्य मानव के यथार्थ रूप जैसा वह है और उसके आदर्श रूप जैसा उसे होना चाहिए के बीच मध्यस्थ बनता है"।[6]

यदि व्यंग्यकार समाज का सम्मानित नेता अथवा किसी आंदोलन का संचालक रह चुका है तो उसकी रचनाओं में सुधार करने की क्षमता अधिक होगी। जिस व्यंग्यकार का आदर्श जन– समुदाय में जितना अधिक स्वीकृत होगा उसकी व्यंग्य रचनाओं में उतनी ही सुधार करने की शक्ति अधिक होगी।इस प्रकार पूर्णतया सुधारक न होते हुए भी व्यंग्यकार अपनी रचनाओं द्वारा जीवन के स्वस्थ मूल्य की स्थापना में सहयोग देता । इस प्रकार हम उपरोक्त विवेचन के आधार पर कह सकते हैं कि एक स्वस्थ व्यंग्य द्वारा व्यंग्यकार एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी अच्छी भूमिका निभा सकता है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि व्यंग्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यंग्यकार जीवन की विसंगतियों, खोखलेपन एवं पाखंड को दुनिया के सामने उजागर करता है। जिनसे हम सब परिचित तो हैं किंतु उन स्थितियों को दूर करने, बदलने की कोशिश नहीं करते बल्कि बहुधा उन्ही विद्रूपताओं एवम् विसंगतियों के बीच जीने की, उनसे समझौता करने की आदत बना लेते हैं। परंतु जब व्यंग्यकार किसी विशेष स्थिति के बारे में दृढ़ता से महसूस करता है खासकर उस स्थिति के बारे में जब उसको लगता है कि किसी के साथ गलत व्यवहार किया जा रहा है, या समाज में कोई गलत काम किया जा रहा है, तब व्यंग्यकार अपनी रचनाओं में व्यंग्य का प्रयोग कर समाज में फैली इन विसंगतियों एवं विद्रूपताओं का विरोध करता है। व्यंग्यकार एक कुशल सर्जन की तरह समाज में फैले भ्रष्टाचार, पाखंड एवं विसंगति रूपी रोगों का अपने व्यंग्य द्वारा इलाज करते हुए एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी भागीदारी निभाता हैं।वह अपने व्यंग्य–बाण सामाजिक बुराइयों पर तब तक छोड़ना रहता है जब तक या तो ये बुराइयां समाज से खत्म ना हो जाए या प्रभावहीन ना हो जाए। इस प्रकार हम कह सकते हैं की व्यंग्य हिंदी साहित्य की एक ऐसी सशक्त विधा है, जो लोगों को सामाजिक बुराइयों के प्रति सजग करते हुए, उन बुराइयों का विरोध कर उनको खत्म करने का काम करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं,1978, परिचय।
2. नरेंद्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं,,1977, पृष्ठ–8

3. James Hannay: Satire & Satirist, 1854, London.
4. सरोजिनी प्रीतम, हंसिकाए, भूमिका से।
5. मधुसूदन पाटिल, अथ व्यंग्यम, पृष्ठ–10
6. John. M.Bullit: Jonather Swift and the Anotomy of satire, Cambridge,1961,page_1